विद्यालय आधारित आकलन के लिए कार्यनीतियां_प्रतिलिपि

प्रिय सहकर्मियों नमस्कार, हम विद्यालय आधारित आकलन के बारे में चर्चा करेंगे। विद्यालय आधारित आकलन से संबंधित निम्न चार महत्वपूर्ण कार्यनीतियां हैं।

स्व-आकलन: स्व-आकलन छात्रों द्वारा स्वयं किया जाता है। स्व-आकलन का मतलब यह नहीं है कि अध्याय के अंत में हमारे पास कई प्रश्न हैं जिनका उत्तर छात्रों को देना है। स्व-आकलन में छात्रों की गहरी भागीदारी शामिल होती है।

सहकर्मी-आकलन: सहकर्मी-आकलन में, छात्र एक-दूसरे का आकलन करते हैं ताकि वे समझ सकें कि वे कैसे प्रगति कर रहे हैं और अन्य छात्र कैसे प्रगति कर रहे हैं और वे किस प्रकार दूसरों द्वारा की गई बेहतर प्रगति के आधार पर अपने निष्पादन में सुधार कर सकते हैं।

समूह कार्य आकलन: शिक्षक के रूप में हम हर छात्र का व्यक्तिगत आकलन करने के अभ्यस्त हैं। इसके अलावा हम उनका आकलन समूहों में भी कर सकते हैं। हम देख सकते हैं कि वे एक-दूसरे का कैसे सहयोग कर रहे हैं, कैसे वे एक-दूसरे की मदद कर रहे हैं और एक समूह के रूप में वे कैसे खुद को शामिल कर चीज़ों को बेहतर कर रहें हैं।

पोर्टफोलियो आकलन: निर्धारित समयावधि में जब आकलन किसी विशेष पहलू पर होता है, तो उसे पोर्टफोलियो आकलन कहा जाता है। पोर्टफोलियो आकलन में कई चीज़ों को करने में छात्र भी शामिल होते हैं, न केवल छात्रों के रिकॉर्ड को लंबे समय तक बनाए रखने के लिए।

आइए अब हम हिन्दी भाषा में कक्षा 5 के सीखने के प्रतिफलों का उदाहरण लेते हैं और देखते हैं कि कैसे इसमें स्वयं, सहकर्मी, समूह कार्य और पोर्टफोलियो का आकलन किया जा सकता है।

हिंदी भाषा में कक्षा 5 के लिए सीखने का प्रतिफल है:

उचित विराम चिह्न और संयोजन के साथ, मौखिक, दृष्टिगत सुराग से हिंदी में अनुच्छेद लिखना।

हिंदी भाषा में कक्षा 5 के लिए समान स्तर पर एक और सीखने का प्रतिफल है:

एक लघु जीवनी और मिनी आत्मकथा लेखन।

इन दो सीखने के प्रतिफलों के आधार पर, हम समझते हैं कि छात्रों को न केवल पाठ की पहचान करने और कई बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता विकसित करनी है, बल्कि भाषा का उपयोग करना भी जरूरी है। इन दो सीखने के प्रतिफलों के आधार पर, हम स्व-आकलन, सहकर्मी आकलन, समूह कार्य आकलन और पोर्टफोलियो आकलन के तहत कुछ आकलन कार्यनीतियों का विकास कर सकते हैं।

इस सीखने के प्रतिफलों के पीछे मूल उद्देश्य यह है कि छात्र न केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर देने की स्थिति में हो, बल्कि लिखने की क्षमता का विकास करे, विश्लेषणात्मक रुप से चिंतनशील तरीके से और आलोचनात्मक रुप से लिखें, ताकि वे इन क्षमताओं को विकसित करे और सक्षम शिक्षार्थी बन सकें। जब हम छात्रों को एक निबंध लिखने के लिए कहते हैं, तो यह केवल एक धारणा देता है कि उन्हें किसी तरह का काम सौंपा जा रहा है। ऐसा करने के बजाय, हमें छात्रों को सक्रिय तरीके से शामिल करके यह पूछना चाहिए कि वे किस तरह के विषयों पर निबंध लिखना चाहते हैं। इसलिए हमें उनकी राय लेने की स्थिति में होना चाहिए और उसके आधार पर विभिन्न विषयों की पहचान की जा सकती है। उसमें से किसी एक विषय का चयन किया जा सकता है और छात्रों को कुछ मानदंडों के आधार पर उस पर एक निबंध लिखने के लिए कहा जा सकता है।

आम तौर पर हम यह भी मानते हैं कि शिक्षक को आकलन का मानदंड प्रदान करना चाहिए। मानदंड प्रदान करने वाले विषयों को निर्धारित करने के बजाय, शिक्षक मानदंड विकसित करने में छात्रों का सहयोग ले सकते हैं। इस तरह जब शिक्षक और छात्र मानदंडों पर बातचीत करते हैं, तो अच्छे मानदंड विकसित किए जा सकते हैं और यह मानदंड आकलन के मापदंडों को समझने में मदद करते हैं। जब मानदंड शिक्षक और छात्रों द्वारा एक साथ विकसित किया जाता है, तो यह छात्रों में मेटा-कॉगनिशन उत्पन्न करता है। मेटा-कॉगनिटिव योग्यता वे क्षमताएं हैं, जहाँ छात्र यह समझते हैं कि उनकी शिक्षा कैसे हो रही है, उनकी सीखने की दिशा,सीखने की गति आदि कैसी है।

आइए अब हम मान लेते हैं कि छात्रों और शिक्षक द्वारा मानदंड पर चर्चा और विचार-विमर्श किया गया है और एक निश्चित मानदंड को तय किया गया है एक विशेष निबंध पर छात्रों के आकलन के लिए इस मानदंड को हमेशा के लिए तय करने की आवश्यकता नहीं है, यह विषय की आवश्यकताओं और छात्रों के स्तर के अनुसार बदल सकता है। उदाहरण के लिए, छात्रों द्वारा दिए गए मानदंड निम्नानुसार हैं:

आकलन के क्षेत्र में चार मापदंड शामिल हो सकते हैं:- विषय-सूची, सामंजस्य,भाषा, शब्द सीमा।

और आकलन के इन क्षेत्रों में से प्रत्येक को दिए जाने वाले महत्व या स्कोर निम्नानुसार हो सकते हैं: विषय-सूची के लिए - 4 अंक; सामंजस्य के लिए - 3; अंक, भाषा के लिए - 2 अंक और शब्द सीमा के लिए - 1 अंक।

इस प्रकार निबंध का आकलन कुल 10 अंकों के लिए किया जा सकता है। इस मानदंड के आधार पर, यदि छात्र स्वयं का आकलन करते हैं और जब उन्हें मॉडल (प्रतिरुप) उत्तर या मॉडल निबंध से तुलना करते है तो यह उनके निष्पादन को बेहतर करने के लिए एक अनुकरणीय के रुप में भी काम करेगा। इसके अलावा छात्रों को अपने निबंधों का अक्रमतः आदान-प्रदान करने के लिए भी कहा जा सकता है ताकि बाकी उनके कार्य का आकलन कर सके नाकि केवल शिक्षक ही। स्व-आकलन और सहकर्मी आकलन के साथ, हम छात्रों के समूह भी बना सकते हैं जो किसी भी विषय, समान विषय या उसी विषय पर निबंध लिख सकते हैं। जब छात्र समूहों में काम करते हैं, तो वे एक आपसी समझ विकसित करते हैं, वे एक-दूसरे से सीखने और सहकारी क्षमताओं को विकसित करने की क्षमता विकसित करते हैं; यह सब उन्हें आगे बढ़ने में मदद करेगा। इस प्रकार के समूह कार्य भी आवश्यक हैं और इन कार्यों को न केवल निबंध लिखने में बल्कि किसी भी प्रकार के शिक्षण कार्य, सीखने और आकलन में इस्तेमाल किया जा सकता है। इन सभी पहलुओं के अलावा, हम समय के साथ विद्यार्थियों के निष्पादन का रिकॉर्ड भी बनाए रख सकते हैं।

एक वर्ष की अवधी में समय-समय पर एक छात्र ने विभिन्न निबंध लिखे हैं, इन सभी निबंधों को छात्र द्वारा एकत्र किया जा सकता है और निबंध कैसे लिखते हैं यह प्रदर्शित किया जा सकता है। निबंधों का संग्रह और संग्रह में से अच्छे निबंधों का चयन और उनका प्रदर्शन, पोर्टफोलियो प्रबंधन और प्रस्तुति का हिस्सा हो सकती है।

रुब्रिक्स के अंतर्गत विभिन्न प्रकार होते हैं:

एक है समग्र रुब्रिक्स, दूसरा है विश्लेषणात्मक रुब्रिक्स। समग्र रुब्रिक्स के तहत हम महत्व (वेटेज) को उप-वर्गीकृत नहीं करते हैं, वहीं विश्लेषणात्मक रुब्रिक्स के तहत हम निष्पादन के विभिन्न स्तरों को महत्व देते हैं। इस तरह से छात्रों में न केवल यह समझने की क्षमता विकसित होती है कि उन्होंने क्या लिखा है और कैसे लिखा है, बल्कि, यह भी कि कैसे एक विशेष कृति दूसरों की तुलना में बेहतर है, आदि।

चार आकलन कार्यनीतियां जो प्रस्तुत की गई हैं, वे केवल अनुकरणीय प्रकृति के हैं। कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा विभिन्न अन्य उपकरण और तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। उन्हें बच्चों की जरूरतों के अनुरूप बनाया जा सकता है और वे कार्यों के संचालन में एक साथ आने वाले छात्रों की मदद कर सकते हैं और शिक्षक जहाँ भी उन्हें सहायता की आवश्यकता हो, उनकी मदद कर सकते हैं। इस तरह हम विद्यालय आधारित आकलन को बहुत प्रभावी तरीके से लागू कर सकते हैं ताकि छात्र अपने स्वयं के सीखने और प्रगति को समझने के लिए बेहतर स्थिति में हों।